

ਮੁਕ ਹਤਿਆਰਾ ਹਾਈਪਰ ਟੈਂਸ਼ਨ

जीवनशैली, काम का बहुता दबाव और जरूरत से अधिक महत्वाकांक्षी होना 20 से 30 आयु वर्ग के युवाओं में ब्रेन हैमिरिज का कारण बन रहा है। ब्रेन स्ट्रोक के मामले पहले बुजुर्ग अवस्था में देखे जाते थे क्योंकि इसके लिए उच्च रक्तचाप और मध्यमें बुजुर्य कारण होते थे, हाल ही में ऐसे मरीजों की संख्या में वृद्धि हुई है जिनमें बहुत कम उम्र में ब्रेन हैमिरिज का सामना करना पड़ता है और ऐसा उस जीवन शैली के कारण होता है जिसे वे अपनाते हैं। भारत में ब्रेन स्ट्रोक के मामले सालाना प्रति एक लाख लोगों पर 100 से 150 के बीच होते हैं जिनमें से 15 से 20 फीसदी मामले 30 से कम उम्र के युवाओं के हैं।

मानसिक तनाव, कामकाज के अधिक दबाव, अनियन्मित दिनचर्या, प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण, अच्छी नींद का अभाव, गैर स्वास्थ्य और गलत समय पर खानानांक की आदतें, व्यायाम का अभाव और जेनिटिक कारण ब्रेन हैमरिज का कारण बन रहे हैं। इन सभी के चलते कम उम्र में ही उच्च रक्तचाप और मधुमेह का शिकार होना पड़ता है जो ब्रेन स्ट्रोक का कारण बनता है। उच्च रक्तचाप मसितिष्ठ में रक्तसांक का मुख्य कारण होता है। कई बार मरीजों को उच्च रक्तचाप का पता नहीं होता और इसलिए उन्हें इस बात का अहसास तक नहीं हो पाता कि वे एक टाइम बम लिए थे। जो फटने के इतनाजार में है, कई बार उच्च रक्तचाप भी अधिक मानसिक दबाव को नहीं दर्शाता और यही तनाव बढ़ने पर खतरनाक साबित हो जाता है।

हालिया एक मामले में प्रतिस्पर्धात्मक परीक्षा की तैयारी कर रहे एक 22 वर्षीय युवक को अस्पताल में भर्ती कराया गया जिसे बेहद उच्च तर का हाईपर टेंशन था। उसे अधिकबोझीयी की हालत में सिर के पिछले हिस्से में दर्द की शिकायत के साथ लाया गया था। सीटी रैकेन में उसके मसितिष्ठ के अधार वाले हिस्से में बड़े रक्तसांक का पता चला। कई सालों के इलाज के बाद उसके उच्च रक्तचाप को नियंत्रित किया जा सका। मरीज के शरीर के एक हिस्से में अभी

भी कमजोरी है। अस्पताल में सप्ताह में ऐसे चार पाँच मामले आते हैं जो युवाओं में ब्रेन स्ट्रोक से सबृद्धि होते हैं। हाईपरटैंशन एक मूक हत्यारा है और इसका एक सामाज्य रास्ता यही है कि केवल उतना ही द्वारा ले जितना संभाल सकें। द्वायां या जीवनशैली में बदलाव के जरिए उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करना ब्रेन स्ट्रोक से बचने में बड़ी भूमिका अदा कर सकता है। जीवनशैली में सुधार का मतलब है कि नियंत्रित रूप से व्यायाम करना और स्वस्थ खानापान की आदतें अपनाना। आज के कामकाज के माहील में तनाव और प्रतिस्पृशी शामिल है। इसलिए लोगों को तनाव को कम करने के लिए रोजाना कुछ ऐसा हटकर करना चाहिए जिससे तनाव कम हो। ड्सेक्स के लिए अपना कोई शौक अपनाएं या कुछ देर के लिए घ्यान लाएं। मधुमेह और हाईपरटैंशन के कारण रक्त वाहिनियों के भीतर एथरोमा जैसे कुछ तरों का जमात हो जाता है और वाहिनियों के कमजोर पड़ने लगती हैं। एथरोमा के जमात के कारण रक्त वाहिनियां संकरी हो जाती हैं जिससे मरिटिक में रक्त की आपूर्ति में कमी होती है और अंततः मरिटिक उत्तर हो जाते हैं। रक्त वाहिनियों के कमजोर पड़ने से मरिटिक के भीतर ही रक्त वाहिनियों फट जाती है जिससे रक्त का थका जम जाता है और ये सब मिलकर ब्रेन स्ट्रोक का कारण बनते हैं।

अपनी त्वचा को युं खूबसूरत रखें...

अपनी त्वाकी की खुबसूरती किसे अच्छी नहीं लगती लेकिन इसे बरकरार रखने के लिए मशक्त भी करनी पड़ती हैं तो आप भी इनका ध्यान रखें। साफ, स्वस्थ और चमकदार त्वाक से हमारा कॉफीइंस बढ़ता है, लेकिन प्राकृतिक रूप से त्वाक का स्वस्थ रखना आसान नहीं है। हालांकि ऐसे कई खाद्य पदार्थ हैं जो हमारे सिस्टम को साफ रखते हुए त्वाक को खुबसूरत बनाते हैं। स्किन ट्रीटमेंट और फेसपैक के साथ ही हम व्यायाम भी करते हैं, यह भी बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए साफ और दमकती त्वाक पाने के लिए खार हल्दी फड़ चुंकंदर (बीटरूट) – यह हमारे शरीर के जहरौले तत्वों को साफ करता है, रक्त और लिवर को साफ करता है और फी रेडिकल्स का सामना करता है। इसके साथ ही, चुंकंदर में पोटेशियम, अयानन, मैनीशियम, फारफेनस, फाइबर और विटामिन ए, बी और रसी पाया जाता है।

अनार (पॉम्पिनेट) – यह कल वर्ष भर उपलब्ध रहता है और आप इसका ज्यादा से ज्यादा फायदा उठा सकती हैं, यह हमें फी रेडिकल्स से बचाता है और खुन साफ करता है। अनार एंटीऑक्सीडेंट फल है जो रोग प्रारंभिक क्षमता को बढ़ाता है, कोलेस्ट्रॉल को कम करता है और रक्त संचार को बेहतर बनाता है।

परशानियों को दूर करता है, और उपचारात्मक गुणों के कारण विभिन्न प्राकृतिक दवायों में इसका प्रयोग किया जाता है। लाल अंगूर (रेड ग्रेप) – इसमें एंटी इंलमेटरी प्रॉपर्टी पाइ जाती है और ये एंटीऑक्सीडेंट्स से भरपूर होते हैं, जो सिस्टम और रक्त को साफ करने में मदद करते हैं। साथ ही, स्वस्थ त्वाक देने में सहायक होते हैं।

टमाटर – टमाटर का इस्तेमाल कर अपनी त्वाक को सुर्य की किरणों से बचाता है। ये एकने को कम करता है और त्वाक की अंगूलीनेस को भी घटाता है। टमाटर सनबर्न को ठीक करने में भी सहायक है।

मिल्क सब्स्टीट्यूट – त्वाक की समस्याओं से बचने के लिए सुझाव दिया जाता है दूध से पहले करें लेकिन आप इसके न्यू डिंयंस, विटामिन्स और मिनरल्स को एब्जॉर्ब करने के लिए इसके विकल्प प्रयोग कर सकती हैं। लैकिटक एसिड और एंजाइम्स त्वाक को झटका देते हैं।

बीजी – एंटीऑक्सीडेंट्स आमतौर पर गहरे रंग के स्ट्रोबेरीज जैसे ल्यूबेरी, मलबेरी और स्ट्रोबेरी में पाये जाते हैं। यह खाने की ललक को कम करता है जिससे बजन कम करने में मदद मिलती है।

विटामिन ए, बी और सो पाया जाता है। अनार (पॉम्परेन्ट) - यह फल वर्ष भर उपलब्ध रहता है और इसका ज्यादा से ज्यादा फायदा उठा सकती है। यह हमें फी रेडिकल्स से बचाता है और खुन साफ करता है। अनार एंटीऑक्सीडेंट फल है जो रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाता है, कोलेस्ट्रॉल को कम करता है और रक्त संचार को बेहतर बनाता है।

न्यू इंटर्स, विटामिन्स और मिनरल्स का एल्बाम करने के लिए इसके किंवद्वय प्रयोग कर सकती हैं। लैविटक ऐसिड और एंजाइम्स तथा कोई इम्झरव करते हैं।

बोरी - एंटीऑक्सीडेंट्स आमतौर पर गहरे रंग के स्ट्रोबेरीज जैसे ल्यूबेरी, मलबेरी और स्ट्रूबेरी में पाये जाते हैं। यह खाने की ललक को कम करता है जिससे वजन कम करने में मदद मिलती है।



14 कारण क्यों खाएं खीरा



दुनिया में घार सबसे ज्यादा
उगाई जाने वाली सजियों में
से खीरा एक है। आइए
जानें हैं 14 काणा के बाये
रोज खाएं खीरा... अगर
नियमित रूप से खीरे का
सेवन किया जाए तो यह कई
बीमारियों को दूर करता है।
खीरे का इस्तेमाल लोग
अपनी खूबसूरी बढ़ाने के
लिए भी करने लगे हैं। खीरा
गृणकारी है। इसलिए इसे
पौधेंमी देखों में सुपरफॉट
तक कठा जाता है। लेकिन
सहजे व गली-गोलीयों में
गर्मियों के दिनों में कठा हुआ
खीरा खाना बीमारी को
बुलावा देता है। इसलिए सफ
सूखे खीरा खाएं और स्वस्थ
रह। दुनिया में घार सबसे
ज्यादा उगाई जाने वाली
सजियों में से खीरा प्रथम है।

- पानी की क्रांति को पूरा करने वाला - खीरे में 90 फीसद पानी होता है। खीरा खाने के बाद शरीर को पर्याप्त मात्रा में पानी मिल जाता है। यह शरीर में पानी का एक तरह से पुणः बचपण करता है।
 - ठंडक पहुंचाता है - खीरा शरीर को अंदर और बाहर दोनों से ठंडक पहुंचाता है। खीरा खाने से हार्टबर्न की अवस्था में आराम मिलता है। सर्वे की गर्भी से झल्लसी तथा (सनबर्व) पर खीरा लगाने से ठंडक मिलती है।
 - टाइसक निकालता है - खीरे में पानी अत्यधिक होता है। खीरा अधिक खाने पर विषेले पार्दार्थ टाइसक बाहर निकलते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि रोज खीरा खाने से गुड़ की पथरी खस्त हो जाती है।
 - रोजर्मार्क की जरूरत के विटामिन मुहैया करने वाला - रोजाना जिन विटामिन की जरूरत होती है, वे खीरा में हैं। प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने व दैनिक दर्निया के लिए विटामिन वी, और ओरत है। खीरे के छिलंके में विटामिन सी होता है। इसे खाना भी काफीदरम होता है। अगर साबिंयों के जूस में खीरा का भी रस निकालता है तो यह और भी काफीदरम है।
 - त्वार्या के लिए जरूरी खनिज मुहैया करने वाला - खीरा में पोटेशियम, मैनीशियम और स्विसीकान अत्यधिक मात्रा में होता है। यह खनिज त्वार्या के लिए बहुत जरूरी है।
 - खाना पचाने वाला व उजन करने में मददगार - खीरे में पानी अत्यधिक होता है और कैलोरी कम होती है। इसलिए उजन कम करने के इच्छुक लोगों ने खीरा वर्दान है। सुप और सलाद में खीरा खाएं। खीरा में काइबर होते हैं जो खाना पचाने में मददगार होते हैं। कैथूर से प्रशान होते हैं तो रोजाना खीरा खाएं। यह कज़ा के लिए दर्वाझ़ का कार्य करता है।
 - आंखों के लिए लाभकारी - खीरे को स्लाइस की तरह काटकर आंखों की पलक के ऊपर पर रखें। इससे आंखों को ठंडक मिलती है। खीरा की तासीर जलन कम करने की होती है।
 - फैसर से लड़ता है - खीरा खाने से फैसर होने की आशंका कम रहती है। खीरे में साइओसोलारेंक्रिसोल, लैरिक्रिसोल और पाइनारिसोल तत्व होते हैं। ये तत्व सभी तरह के फैसर के रोकथम में कागर हैं।
 - मधुमेह, कालस्ट्रोम और लॅड प्रेशर नियन्त्रक - खीरा के रस में वो हाल हैं जो पैनिक्रियां को सक्रिय करते हैं। पैनिक्रियां सक्रिय होने पर शरीर में इंसुलिन बनती है। इंसुलिन शरीर में बनने पर मधुमेह से लड़ने में मदद मिलती है। खीरा खाने से कालस्ट्रोम का स्तर कम होता है। इससे हृदय संबंधी रोग होने की आशंका कम रहती है। खीरा में काइबर, पोटेशियम और मैनीशियम होता है जो लॅड प्रेशर दुरुस्त रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। खीरा उच्च और निम्न लॅड प्रेशर दोनों में ही एक तरह से दवा का कार्य करता है।
 - मुंह को ताजीगी देता है - खीरा खाने से मसूड़ों की खीमारी कम होती है। खीरे के एक टुकड़े की जीभ से मुंह के ऊपरी हिस्से पर आधा मिनट तक रोके। ऐसे में खीरे से निकलने वाला काइटोक्रिमिल मुंह की दुर्गंध को खत्म करता है।
 - बालों और नायखन के लिए लाभकारी - खीरे में मौजूद तत्व सिलिशिया बालों और नायखनों में चमक लाता है और इन्हें मजबूत करता है। सलकर और सिलिशिया के कारण बाल तोड़ने से बहते हैं।
 - जौड़ों की दवा और गढ़ियाबाय में आरामदायक - खीरे में सिलिशिया प्रूयूर मात्रा में होता है। इससे जौड़ों को मजबूती मिलती है और टिशु प्रस्तर मजबूत होते हैं। गजर और खीरे का जूस एकसाथ निकालकर पीने पर गढ़ियाबाय रोग में मदद मिलती है। इससे धूरीक एसिड का स्तर भी कम होता है।
 - सरदर्द व खुमारी से उबरने में मददगार - अगर सुबह उठने पर सिर में दर्द या खुमारी की शिकायत हो तो सोने से पहले खीरा खाएं। खीरों में विटामिन बी, शूगर और इलेक्ट्रोलाइट्स होते हैं। ये शरीर के लिए पौष्टिक तत्व हैं और सरदर्द व खुमारी से उबरने में मदद करते हैं।
 - गुरदे को आकार में रखता है - खीरे के कारण शरीर में धूरीक एसिड का स्तर नियंत्रित रहता है जिससे गुरदे अपने सही आकार में रहते हैं।



दिल की बीमारी का इलाज है सरसों का तेल

खाने में सरसों तेल का इस्तेमाल स्वास्थ्य को बेहतर बना सकता है और दिल की बीमारी के जोखिम को 70 प्रतिशत कम कर सकता है। एक सरसों प्रोत्साहक इकाई ने यह जानकारी दी है, सरसों शोध एवं संवर्धन कन्सोर्टियम (एमआरपीसी) के अनुसार सरसों का तेल दिल की बीमारी के जोखिम को कम करता है और संतुलित आवश्यक फैटी एपिड अनुपत्ति से जीवन की ऊँगतना बढ़ाता है। एमआरपीसी एक सहायतार्थ सरकार के द्वारा मान्यताप्राप्त शोध संगठन है जिसका ध्येय भारत में सरसों फसल की उपज में सुधार लाना है। एमआरपीसी ने एक बयान में कहा, हम भारतीयों को सरसों तेल अपनाने के लिए प्रोत्साहित करके वैश्विक हरय स्वास्थ्य को बढ़ाना चाहेंगे क्योंकि यह स्वास्थ्य में सुधार लाने और हरयरोग के जोखिम को 70 प्रतिशत कम करने में मदद कर सकता है जैसा कि जर्नल ऑफ प्रिवेटिव्य कार्डियोलॉजी के अध्ययन में कहा गया है।

संपादकीय

दुनिया को अभी कोरोना के बारे में पूरे जवाब नहीं मिले हैं। पहली पहेली ही अपील हल नहीं हुई है कि आखिर कोरोना कैसे पैदा हुआ? विश्व खास्त्य संगठन की जो टीम चीन दौरे पर गई थी, वह भी पुख्ता जवाब के साथ नहीं लौटी है। उस टीम के पास कुछ अँकड़े भर हैं और इस टीम के सदस्यों को भी लगता है, कोरोना-खोज की यह शुरुआत भर है। कोरोना का जवाब खोजना इसलिए भी जरूरी है, ताकि हमारी अनेक बाली पीढ़ियों को ऐसी किसी महामारी से बचाया जा सके। वैज्ञानिकों के लिए यह महान चुनौती है। अबल तो लगभग एक साल बाद चीन ने अंतर्राष्ट्रीय टीम को तुहान पहुँचने दिया। टीम जब तुहान पहुँची, तब वहां शुरू में ही उसे प्रतिकूल माहोल दिया गया। लगभग चार सप्ताह वैज्ञानिक वहां रहे, लेकिन कुछ भी ऐसा उनके हाथ नहीं लगा, जिससे विज्ञान की दुनिया किसी ठोस नतीजे पर पहुँचती है। नैतिकता का तकाजा यही है कि चीन स्वरूप जांच करके दुनिया को सच बताता। आज पूरी दुनिया में उस पर सवाल उठ रहे हैं। महामारी से चीनी विश्वसनीयता को जो क्षति पहुँची है, उसकी भरपाई के प्रति चीन कितना गधीर है? ब्रिटेन के ग्लासगो विश्वविद्यालय से जुड़े वायरोलोजिस्ट डेविड रॉबर्टसन कहते हैं, चीन से प्राप्त व्यापक अँकड़ों से कुछ ऐसी चीजें पूछ हुई हैं, जिनका पहले से ही पता था। अभी भी यह खोज शेष है कि वर्षा चमगाढ़े से यह महामारी सीधे इंसानों में आई? यद्या कोई ऐसा जीव था, जिसके जरिए वायरस चमगाढ़ों से इंसानों में पहुँचा? यह वायरस लोगों में कैसे आया और फिर लोगों के बीच कैसे फैला? ये तमाम सवाल वैज्ञानिकों को उत्तिर ही मथ रहे हैं। 30 मार्च को एक प्रेस ब्रीफिंग में कोविन्देशन के नैर्थलैंड हॉस्पिटल की पालिक हेल्प वायरोलोजिस्ट (चीन गई डल्लूप्रूचओ टीम की एक सदस्य) खिया फिशर ने कहा, 'यह कोरोना की जड़ खोजने के लिए अपेक्षित लंबी यात्रा का पहला कदम है।' आम लोगों की तरह ही नेचर में प्रकाशित रिपोर्ट भी यह तलाशने की कोशिश करती है कि आखिर चीन से क्या मिला? डॉक्टरों की टीम चीन में उस जीव तक नहीं पहुँच सकी, जबकि वहां डायरों जीवों के परीक्षण की कोशिश हुई। यह टीम चीन के बन्य-जीव बाजारों की ओर भी इशारा करती है और यह भवियत में पड़ताल का विषय है। टीम की सिफारिशों में यह शामिल है कि तुहान के पश्च और बन्य-जीव बाजार का गहराई से अध्ययन किया जाए। जहां तक चीन का सवाल है, तो वह भी अपने स्तर पर जीव में जुटा दिखता है। उसकी निगाह कोरोना के शुरुआती मामलों के नमूनों पर है। वायरस के शुरुआती नमूनों की पड़ताल जरूरी भी है। चीन ने विश्व खास्त्य संगठन के साथ एक समझौता किया है, जिसके अनुसार, कोरोना विस्फोट की जांच लंबे समय तक चलेगी। कुछ वैज्ञानिकों को यह आशका अब कम है कि वायरस किसी प्रयोगशाला से लीक हुआ होगा, लेकिन ज्यादातर वैज्ञानिक मान रहे हैं कि अभी किसी आशका या संभावना को खारिज नहीं करना चाहिए। कोरोना के प्रति अभी तक कुछ नरम दिखता सायुक्त राष्ट्र कर्तव्य न भूले कि दुनिया में 28 लाख से ज्यादा लोग मारे गए हैं और 13 करोड़ से ज्यादा संक्रमित हुए हैं। अतः कोरोना विस्फोट की जांच पूरी तरह और पारदर्शीता के साथ होनी चाहिए, तभी लोगों का मनोबल बढ़ेगा और डल्लूप्रूचओ की प्राप्तिग्रन्थिता भी।



आज के ट्वीट

संक्लिप्त

छत्तीसगढ़ में नक्सलियों का सामना करते वक्त शहीद हुए बहादुर सुखाकर्मियों को जगदलपुर में श्रद्धांजलि अर्पित की। देश आपके थोर्य और बलिदान के कमी गुला नहीं पाएगा। पूरा देश शोक संतप्त परिवारों के साथ खड़ा है। अशांति के विलङ्घ इस लार्डां को हम अतिरिक्त रूप ढेने के लिए संकल्पित हैं। -- अग्नित शाह

Digitized by srujanika@gmail.com

यह मत कहो खुदा से मेरी मुश्किलें बड़ी हैं, इन
मुश्किलों से कह दो मेरा खुदा बड़ा है - **विपिन जैन**

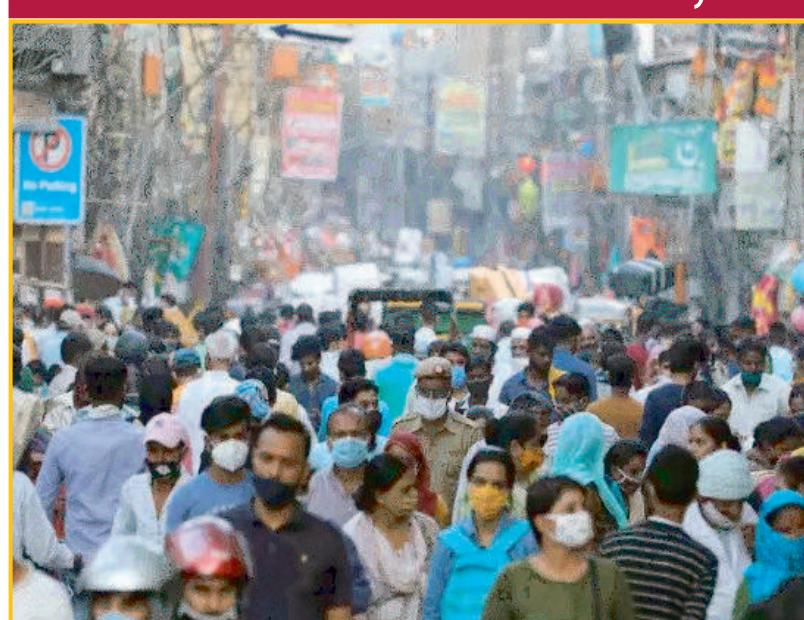
हम जब भी स्थिरं के बारे में सोचते हैं, लगता है कि हमारे अलावा कई भी इस दुनिया में पीढ़ित हैं ही नहीं, भगवान् ने सिरं फ्लार उत्तर ही दुखों का पढ़ाई रखा हुआ है। यदि आप ऐसा सोचते हैं तो निश्चित तौर पर गति सोचते हैं। भगवान् को करते हैं और एक बाहर से बाहर आकर अपने आपसंस देखते की कोशिश करें, आप पायेंगे कि आपसे अधिक गमों के बोझ तल, बिना अपने दुखों को अपने पर हाथी करने के चलते कई लोग अपना जीवनयनपन कर रहे हैं। ऐसा शी एक यिंदिलिल उजड़हरण आज हम आपके सामने पेश करने जा रहे हैं। चलिए लेकर चलते हैं आपको एक प्रवृत्ति से प्रवृत्ति से लेकर एक चार्ट्ड अकाउंटेंट बनने का चलिए। वाहजूद इसके विपरिन ने कभी-भी अपनी कर्मी को अपने पर हाथी नहीं होने दिया। अबने बचपन का बहुत बड़ा छोटा हिस्सा विपरिन ने जीपी राह स्थानों के सहारे रेकॉर्डिंग की बिताया, वह भी एक सिक्के की। 12 वर्ष की उम्र में लॉयंस कलब द्वारा प्राप्त द्रव्यसिक्कल ने मानो विपरिन को उड़ाकन के लिए पांच दे दिए हैं। इसके बाद विपरिन कभी नहीं रुक्के और लगभग 20 वर्ष की उम्र यानि 1994 में उनकी पहली सफल सर्जरी हुई। करते हैं न, अपनों का साथ, और सर पर हाथ हो, कि तिनां भी बड़ा समाज ही कर्यों न हो, धूल-सा लगता है। सभी के समर्थन से लेकिन न अपना ग्रेजुएट बनने परा किया और आकर सींगे की आर्टिकलिंग परीक्षा

तक का सरपरे था। गुजरात के दाहोद जिले के एक छोटे-से गांव लिमधी में वर्ष 1975 में जने विधिन जैन का बधायन महसूल 8 माह की प्रक्रिया से दो दिनों में ही पूरा करवा दिया गया। अब राखी 845 लाका आइटर्स बॉम्बे की 19 राशिनी के द्वारा विधि विधिन और क्रेडिट का सहायता से केवल खड़े होने के सी नहीं, बल्कि बढ़ने के भी सहायता की जा रही है।

एडवेंचर्स के हैं बेहद शौकीन

A photograph of a man with dark hair and glasses, wearing a dark suit and a light-colored shirt. He is standing behind a podium with a laptop on it, gesturing with his hands as he speaks. The background is a plain, light-colored wall.

सावधानी घटी, महामारी बढ़ी



३० अप्रैल २०१८

कोरोना से बचाव के लिए टीकाकरण में तेजी आयी है। लोग पहले के मुकाबले वैक्सीनेशन के प्रति संघर्ष हुए हैं। रविवार, 04 अप्रैल के आकड़े के मुताबिक, देश में पिछले 24 घंटे में 11 लाख से अधिक टेस्ट किए गए। इस दौरान 11 लाख, 66 हजार, 716 टेस्ट हुए। इसके साथ देश में कुल 24 करोड़, 81 लाख, 25 हजार, 908 टेस्ट किए जा चुके हैं। 3 अब तो 45 साल और उसके पार वाला हर

व्यक्ति वैद्यतीन मन लगवा सकता है। फिर भी कुछ तो है कि देश में कोरोना फिर से लौट आया है। दैली की राज्य सरकार अपने यहां इसे बांधी लहर तब रही है। पूरे देश के लिए यह दूसरी लहर जरूर है। इस बात की पुष्टि कोविड टारस्क फोर्स के प्रमुख डॉक्टर नीके पाँच के एक बयान से ही जाती है। वे कहते हैं कि कुछ राज्यों में चिंता विशेष रूप से अधिक है, लेकिन कोई भी राज्य आत्मसंतुष्ट नहीं हो सकता। जब हम सोच रहे थे कि हमन बचाव के तरीके निकाल लिए हैं, तब यह वायरस बापस आ गया।

राज्या के ह। इनक आत्मरक्त चुनाव वाले प्रदेशों में भी लोगों की लापरवाही साफ़ देखी रहा जा सकती है। हाल यह है कि 04 अप्रैल को देश में बीते 24 घंटे में कोरोना मरीजों की संख्या 93 हजार, 249 हो गई। इसके साथ मरीजों की संख्या 1 करोड़, 24 लाख, 85 हजार, 509 हो गई। इस एक दिन में ही 513 लोगों की मौत भी हुई। इस बीमारी से मरने वालों की संख्या 1 लाख, 64 हजार, 623 तक पहुंच गई है। मरीजों की यह कुल संख्या कोरोना की फहली लहर से करीब 05 हजार ही कम है। इसके पहले 16 सितंबर को 97

पादकीय

जल रहे हैं देश के जंगल

- प्रमोद भार्गव

गर्भियों के शुरू होने के साथ ही देश के राष्ट्रीय अभ्यारण्यों में दावानल की घटनाएँ देखने में आने लगी हैं चार अभ्यारण्यों में सैकड़ों हेक्टेयर वन जलकर खाक हो गए। किंतु वन जीव हताहत हुए, यह अभी साफ नहीं है लेकिन बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान में लगी आग से बचने वेले लिए बायों ने घर बदलना शुरू कर दिया है। इसी फेर में एक बाघ ने बाधिन को मार दिया। उद्यान प्रबंधन इस मोरों को आपसी संघर्ष की वजह बताकर पल्ला छाड़ रखा है लेकिन यह संघर्ष एक बाघ के दूसरे बाघ के क्षेत्र में अतिक्रमण करने से छिड़ा था। मध्य-प्रदेश के पत्ता और माधव राष्ट्रीय उद्यान में भी आग की घटनाएँ सामने आ रही हैं। यही लाल उत्तर-प्रदेश के दुधासा और दिल्ली के

फीसदी वन क्षेत्र खाली पड़ा है। चीड़ के जंगल और लैटाना की झाड़ियां इस आग को फे लाने में सबसे ज्यादा जिम्मेदार हैं। दरअसल चीड़ के पत्तों में एक विशेष किस्म का ज्वलनशील पदार्थ होता है। इसकी पत्तियां पतझड़ के पौसम में आग में भी की काम करती हैं। गर्मियों में परिया जब सूखे जाती हैं तो इनकी ज्वलनशीलता और बढ़ जाती है। इसी तरह लैटाना जैसी विशेष झाड़ियां आग को भड़काने का काम करती हैं। करीब 40 लाख हेक्टेयर वन क्षेत्र में ये झाड़ियां फैली हुई हैं। इस बार इन पत्तियों का भयावह दावानिं में बदलने के कारणों में वर्षा की कमी



दुर्दशा देखने में नहीं आती। जंगल में आग लगने के कई कारण होते हैं। जब पहाड़ियां तपिश के चलते सुख्क हो जाती हैं और चुड़ाने भी खिसकने लगती हैं, तो अकसर घर्षण से आग लग जाती है। तजे हवाएं चलने पर जब बांस परस्पर टकराते हैं तो इस टकरात से पाड़ा होने वाले घर्षण से भी आग लग जाती है। बिजली गिरना भी आग लगने के कारणों में शामिल है। ये कारण प्राकृतिक हैं, इन पर विराम लगाना नामुमकिन है। किंतु मानव-जनित जिन कारणों से आग लगती है, वे खतरनाक हैं। इसमें बन-सपदा के दोहन से अटारूट मनुषा करने की होड़ शामिल है। भू-माफिया, लकड़ी माफिया और भ्रष्ट अधिकारियों के गढ़जड़ की तिकड़ी इस करोबर का फलने-फूलन में सहायक बनी हुई है। राज्य सरकारों ने आजकल विकास का पैमाना भी आर्थिक उत्पादकीय का मान हुआ है, इसलिए सरकारों पर्यावरणीय क्षति को नियंत्रण दिया गया है। आग लगने की मानवजन्य अन्य वजहों में बीड़ी-सिरगरी भी है, तो कभी शरारती तरब भी आग लगा देती है। कभी ग्रामीण पालतू पूशुओं के चारे के लिए सूखी व कड़ी पड़ चुकी धास में आग लगती है। ऐसा करने से धरीरी में जहा-जहा नमी होती है, वहा-वहां धास की नूतन कांपें पूर्णे लगती हैं। जो मवेशियों के लिए पौष्टिक आहार का काम करती हैं। पर्यटन वाहनों के साइलेंसरों से निकली चिंगारी भी आग की वजह बनती है। आग से बचने के कारण उपायों में पतझड़ के दिनों में ट्रूटकर गिर जाने वाले जो पते और टहनियां आग के कारक बनते हैं, उन्हें जैविक खाद में बदलने के उपाय किए जाएं। केंद्रीय हमालय में 2.1 से लेकर 3.8 टन प्रति हेक्टेयर पतझड़ होता है। इसमें 82 प्रतिशत सूखी पतियां और बांकी टहनियां होती हैं। जगलों पर वन विभाग का अधिकार प्राप्त होने से पहले तक ज्ञान परंपरा के अनुसार ग्रामीण इस पतझड़ से जैविक खाद बना लिया करते थे। यह पतझड़ मवेशियों के विछोरे के रूप में भी इतेसमात किया जाता था। मवेशियों के मल-मूत्र से यह पतझड़ उत्तम किस्म की खाद में बदल जाता था। किंतु आवायाकारिक वन कानूनों के बनूद में आने से वनोपज्ञ पर रथानीय लोगों का अधिकार खत्म हो गया। स्थानीय ग्रामीण और मवेशियों का जंगल में प्रवेश वर्जित हो जाने से पतझड़ यथास्थिति में पड़ा रहकर आग का प्रमुख कारण बन रहा है।

आज का राशिफल

मेष	अर्थिक योजना सफल होगी। धन, पद, प्रतिश्वामें वृद्धि होगी। यात्रा देशटन की स्थिति सुखद व लाभप्रद होगी। रुपए ऐसे के लेन-देन में सावधानी रखें। बाहन प्रयोग में सावधानी रखें।
वृषभ	जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। न. अनुबंध प्राप्त होगे। पिता या उच्चाधिकारी का सहयोग मिलेगा। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा।
मिथुन	पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। राजनीतिक महत्वाकांक्षा की पूर्ति होगी। किसी रिसेटेडर के आमाम से मन प्रसन्न रहेगा। फिजूलखर्ची पर नियंत्रण रखें। अपने से तनाव मिलेगा।
कर्क	व्यावसायिक योजना सफल होगी। कार्यश्क्रेत्र में रुकावटों का सामना करना पड़ेगा। आय और व्यय में एक संतुलन बना कर रखें अन्यथा कर्ज की स्थिति आ सकती है। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी।
सिंह	प्रतियोगी परीक्षाओं में सफलता के योग हैं। धन लाभ की संभावना है। संतान के संबंध में सुखद समाचार मिलेगा। रुपए ऐसे के लेन-देन में सावधानी रखें। बाहन प्रयोग में सावधानी रखें।
कन्या	पारिवारिक जीवन सुखमय होगा। संतान के दायित्व की पूर्ति होगी। स्थानान्तरण व परिवर्तन की दिशा में किया गया प्रयोग सफल होगा। शासन सत्ता का सहयोग मिलेगा। बाणी पर नियंत्रण रखें।
तुला	व्यावसायिक तथा अर्थिक प्रयास सफल होगे। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय न लें। जीविका के क्षेत्र में प्रगति होगी। जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। ईश्वर के प्रति आस्था बढ़ेगी।
वृश्चिक	अर्थिक पक्ष मजबूत होगा। अनावश्यक खर्चों का सामना करना पड़ेगा। पिता या उच्चाधिकारी से वैचारिक मध्येत्र हो सकते हैं। संतान के स्वास्थ्य के प्रति सचेत हों। अनावश्यक खर्चों का व्यर्थ की भागदौड़ रहेंगी।
धनु	व्यावसायिक तथा आर्थिक योजनाएं सफल होंगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत हों। खान-पान में संयम रखें। प्रेम प्रसंग पापड़ होंगे। बेरोजगार व्यक्तियों को रोजगार मिलेगा। विरोधियों का पराभव होगा।
मकर	पारिवारिक जनों से पीड़ा मिल सकती है। संतान के संबंध में चिंतित रहें। आय के नवीन स्त्रोत बनेंगे। उद्दर विकार या लच्छे के रोग से पीड़ित रहेंगे। मनोरंजन के अवसर प्राप्त होंगे। प्रियजन पीड़ा मिल सकती है।
कुम्भ	जीवनसाथी का सहयोग व सानिध्य मिलेगा। उपहार व सम्मान का लाभ मिलेगा। यात्रा देशटन की स्थिति सुखद व लाभदार होगी। आय के नवीन स्त्रोत बनेंगे। विरोधी परासर होंगे।
मीन	गृहांपयोगी वस्तुओं में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य के प्रति सचेत हों। यात्रा में अपने सामान के प्रति सचेत हों, चोरी या खोने की आशंका है। कोई भी महत्वपूर्ण निर्णय न लें। फिजूलखर्ची पर नियंत्रण रखें।

